श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 29, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शुक्रवार, 4 सितम्बर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

अकेले कार या साइकिल चला रहे व्यक्ति के लिए मास्क पहनना जरूरी नहीं : स्वास्थ्य मंत्रालय

नई दिल्ली, नीलू रंजन। कोरोना के संक्रमण को रोकने के नाम पर दिल्ली समेत पूरे देश की पुलिस लोगों का चालान काटने में लग गई है। इस सिलसिले में कार में अकेले बैठकर उसे चला रहे लोगों का चालान भी काटा जा रहा है। अब केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने साफ कर दिया है कि अकेले बैठकर कार चला रहे लोगों के मास्क पहनने का कोई दिशानिर्देश जारी ही नहीं किया गया है। इसी तरह अकेले साइकिल चला रहे व्यक्ति के लिए भी मास्क पहनना जरूरी नहीं है।

अकेले साइकिल या कार चला रहे लोगों के मास्क नहीं पहनने के कारण चालान काटे जाने के बारे में एक सवाल का जवाब देते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव राजेश भूषण ने कहा कि 'स्वास्थ्य मंत्रालय ने जो दिशानिर्देश जारी किये हैं, उनमें यदि आप अकेले किसी कार को बैठकर कार चला रहे हैं, तो आपको मास्क पहनना है, इस आशय का कोई दिशा-निर्देश नहीं है।'

जाहिर है पुलिस बिना किसी दिशानिर्देश के अपनी मर्जी से इस तरह का चालान काट रही है। इसी तरह से राजेश भूषण ने यह भी साफ कर दिया कि अकेले साइकिल चला रहे व्यक्ति का भी मास्क नहीं पहनने के कारण चालान नहीं काटा जा सकता है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दिनों में लोगों में फिजिकल एक्टीविटी में जागरूकता बढ़ी है। लोग दो-दो, तीन-तीन के समूह में साइकलिंग करते हैं, जॉगिंग करते हैं। यहां मास्क पहनना चाहिए, क्योंकि वहां सामाजिक दूरी का पालन करना और एक-दूसरे को संक्रमण से बचाना जरूरी है। लेकिन उन्होंने यह साफ कर दिया कि आप अकेले साइकिल चला रहे हैं, तो मास्क पहनने संबंधी कोई दिशानिर्देश स्वास्थ्य मंत्रालय ने जारी नहीं किया है।

अब ग्रामीण इलाकों में भी तेजी से फैल रहा है कोरोना संक्रमण

नई दिल्ली, जागरण ब्यूरो। जहां एक ओर ग्रामीण इलाकों में कोरोना के तेजी से बढ़ती संख्या नई चिंता का सबब बन गया है। अनलॉक-चार में अधिकांश प्रतिबंधों को हटा लिये जाने और उसके बाद आने वाले त्योहारी सीजन को देखते हुए कोरोना के मामलों की संख्या और भी तेजी से बढ़ सकती है। लेकिन राहत की बात यह है कि सबसे अधिक प्रभावित राज्यों में नए मामलों में पिछले तीन हफ्ते में कमी के संकेत मिले हैं। एसबीआइ की इकोरैप रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण इलाके अब तेजी से कोरोना की चपेट में आते जा रहे हैं। कोरोना के पूरे देश में व्यापक प्रसार का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अप्रैल में 10 से कम केस वाले कुल 458 जिले थे जिसमें से 415 ग्रामीण जिले थे। अब कुल 11 जिले ही ऐसे बचे हैं, जिसमें कोरोना से 10 से कम केस आए हैं, उनमें 10 ग्रामीण हैं। यानी अप्रैल से अब तक 405 अन्य ग्रामीण जिलों मे कोरोना पैर पसार चुका है।

कोर्ट ने जैद विलात्रा को NCB की हिरासत में भेजा, रिया के पिता से CBI ने की पूछताछ

मुंबई, एजेंसियां। अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत के मामले में ड्रग्स एंगल की जांच कर रही नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (ठउइ) ने जैद विलात्रा को एस्प्लेनेड कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने उसको 9 सितंबर तक एनसीबी की हिरासत में भेज दिया है। उसके वकील तारक सैय्यद ने कोर्ट के समक्ष एक अर्जी दाखिल करके कहा है कि जैद ने एनसीबी को जो भी बयान दिया है, वह सही या स्वैच्छिक नहीं है। गौरतलब है कि एनसीबी ने बुधवार को दो लोगों जैद विलात्रा और अब्दुल बासित परिहार को गिरफ्तार था। परिहार का संबंध सैमुअल मिरांडा से बताया जा रहा है। सैमुअल मिरांडा पर मुख्य आरोपी रिया चक्रवर्ती के भाई शौविक चक्रवर्ती के कहने पर ड्रग्स खरीदने का आरोप है।

वहीं, दूसरी ओर बॉम्बे हाईकोर्ट ने अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत मामले में मीडिया ट्रायल के खिलाफ कार्रवाई की याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि हम मीडिया से आग्रह करते हैं कि वह मौत के संबंध में जांच की रिपोर्टिंग में संयम बरतें और जिससे किसी भी तरह से जांच में बाधा न आए। सुशांत की मौत के मामले में केंद्रीय जांच एजेंसी (उइक) की टीम आज मुख्य आरोपी रिया चक्रवर्ती के पिता इंद्रजीत चक्रवर्ती से लगातार तीसरे दिन पूछताछ की गई। इसके अलावा सुशांत के कुक नीरज और केशव भी पूछताछ की गई।

सीबीआइ रिया से अब तक करीब 35 घंटे पूछताछ कर चुकी है

बता दें कि बुधवार को रिया की मां संध्या और भाई शौविक से पूछताछ नहीं हुई। मंगलवार को रिया के माता-पिता और भाई तीनों से पूछताछ हुई थी। इसके अलावा रिया से सोमवार के बाद से पूछताछ नहीं हुई है। वह अब तक चार बार सीबीआइ के सामने पेश हुई है। सीबीआइ रिया से अब तक करीब 35 घंटे पूछताछ कर चुकी है।

वहीं, सुशांत की मौत के मामले में मनी लॉन्ड्रिंग की जांच कर रहे प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने सुशांत के दोस्त और एक फर्म में उनके पार्टनर वरुण माथुर को पूछताछ के लिए बुलाया है। वह ईडी के दफ्तर पहुंच गया है। वरुण से मामले में कल भी पूछताछ हुई थी। ईडी ने गोवा के होटल व्यवसायी से पूछताछ कर चुकी है। वह गोवा स्थित होटल टैमरिंड एवं कैफे कोटिंगा का मालिक है। रिया की उसके साथ 2017 की एक चैट ईडी को प्राप्त हुई है।

महाराष्ट्र के गृह मंत्री अनिल देशमुख ने कहा है कि सुशांत की मौत के मामले में मुंबई पुलिस को निशाना बनाया गया है। महाराष्ट्र पुलिस और मुंबई पुलिस की बड़ी प्रतिष्ठा है। मुंबई पुलिस की तुलना स्कॉटलैंड यार्ड पुलिस से होती है। लेकिन पुलिस की छवि को धूमिल किया है। देशमुख ने कहा कि रिटायर्ड आइपीएस अधिकारी ने इसको लेकर जो जनहित याचिका दाखिल की है, मैं उसका स्वागत करता हूं।

सुशांत की डॉक्टर सुसान वाकर भी पूछताछ के लिए डीआरडीओ के गेस्ट पहुंची थी। सीबीआइ की टीम यहीं ठहरी हुई हैं। गुरुवार को मामले में सीबीआइ जांच का 14वां दिन था। बुधवार को रिया के पिता से 10 घंटे तक पूछताछ हुई थी। इस दौरान सुशांत के मैनेजर सैमुअल मिरांडा, उनके कुक नीरज सिंह, स्टाफ केशव और बिजनेस मैनेजर श्रुति मोदी से भी पूछताछ हुई थी।

3 महीने के अंदर हटाई जाए रेलवे ट्रैक के आसपास बनी झुग्गियां : सुप्रीम कोर्ट

अपने आदेश में सुप्रीम कोर्ट ने 140 किलोमीटर लंबे रेलवे ट्रैक के आसपास से अतिक्रमण और कचरा हटाने का आदेश दिया है

नई दिल्ली, माला दीक्षित। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली में रेलवे ट्रैक के आसपास बनी लगभग 48000 झुग्गियो को 3 महीने में हटाने का आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कोई भी कोर्ट झुग्गिया हटाने के फैसले पर रोक नहीं लगाएगी और न ही इसमें किसी भी तरह का राजनैतिक व अन्य हस्तक्षेप होगा। झुग्गी-झोंपड़ियों को चरणबद्ध तरीके से हटाया जाएगा।

शीर्ष अदालत ने अतिक्रमणों को हटाने के संबंध में किसी भी तरह का स्टे देने पर रोक लगा दी है। कोर्ट ने

साफ कर दिया कि अगर रेलवे ट्रैक के आसपास से अतिक्रमण हटाने से संबंधित कोई अंतरिम आदेश दिया जाता है तो वह प्रभावी नहीं होगा। इसके साथ ही कोर्ट ने रेलवे ट्रैक के आसपास कचरा हटाने का भी आदेश दिया है। बता दें कि इन रेलवे ट्रैक की लंबाई 140 किलोमीटर है।

न्यायमूर्ति अरुण मिश्रा, बी आर गवई और कृष्ण मुरारी की खंडपीठ ने पर्यावरण प्रदूषण (रोकथाम और नियंत्रण) प्राधिकरण (ईपीसीए) द्वारा निर्देशित रिपोर्ट पर संज्ञान लेते हुए कहा कि एक महीने के भीतर क्षेत्र से कचरे और अतिक्रमणों को हटाने के लिए कार्रवाई की जानी चाहिए।

पीठ ने कहा कि हम सभी हितधारकों को यह भी निर्देशित करते हैं कि झुग्गियों को हटाने की एक व्यापक योजना बनाई जाए और इसे चरणबद्ध तरीके से क्रियान्वित किया जाए। कोर्ट ने कहा कि सुरक्षा क्षेत्रों में जो अतिक्रमण है, उन्हें तीन महीने की अवधि के भीतर हटाया जाए और इस दौरान किसी भी प्रकार का राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

ईपीसीए ने अपनी रिपोर्ट में रेलवे को दिल्ली और इसके आसपास के क्षेत्र से शुरू होने वाले उत्तरी क्षेत्र में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए समयबद्ध योजना पेश करने के लिए निर्देश देने की मांग की थी। पीठ ने कहा कि इसपर खर्च होने वाली राशि का 70 प्रतिशत रेलवे और 30 प्रतिशत राज्य सरकार द्वारा वहन किया जाएगा।

पीठ ने एसडीएमसी, रेलवे और अन्य एजेंसियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि उनके ठेकेदार रेलवे पटरियों के किनारों पर कूड़ा / कचरा न डालें और रेलवे एक दीर्घकालिक योजना भी तैयार करेगा कि पटरियों के किनारे कचरे का ऐसा ढेर न लगे। 28 फरवरी को, शीर्ष अदालत ने बाहरी दिल्ली क्षेत्र में रेलवे लाइनों के दोनों ओर पड़े प्लास्टिक बैग और कचरे के ढेर को लेकर दिल्ली सरकार, नागरिक निकायों और ईपीसीए को इसे हटाने के लिए एक ठोस योजना बनाने को कहा था।

भाजपा सांसद रीता बहुगुणा जोशी कोरोना पॉजिटिव

प्रयागराज,जेएनएन। कोरोना संक्रमण लगातार बढ़ रहा है। इसकी जद में प्रयागराज की संसद प्रो. रीता बहुगुणा जोशी भी आ गई हैं। पिछले दिनों लखनऊ में रहने के दौरान उन्हें कुछ तकलीफ हुई तो जांच कराई गई। रिपोर्ट पॉजिटिव आने पर पीजीआई लखनऊ में भर्ती कराया गया है। अब उनके संपर्क में आने वाले लोग भी सतर्क हो गए हैं। परिवार के सदस्य भी खुद को क्वारंटाइन कर लिए हैं।

भाजपा सांसद रीता बहुगुणा जोशी ने को गले में खराश के साथ कुछ तकलीफ की वजह से अपनी जांच कराई थी। उनकी

कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। भाजपा महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी ने बताया कि सांसद की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आने के बाद वे सभी कार्यकर्ता खुद को होम क्वारंटाइन कर लिए हैं जो पिछले दिनों उनके संपर्क में आए थे। उन्होंने संगठन के कार्यकताओं को सतर्क रहने की भी हिदायत दी। कहा कि अनावश्यक रूप से कहीं भी न जाएं।

पिछले दिनों कैबिनेट मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह की भी रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी। वह प्रयागराज में शहर पश्चिमी की सड़कों का लोकार्पण करने आए थे। उसी दिन रात में पॉजिटिव आने की सूचना मिली थी। उसके बाद वह लखनऊ लौट गए थे और अस्पताल में भी भर्ती हो गए थे। उस समय एक कार्यक्रम में सांसद प्रो. रीता बहुगुणा जोशी, महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी व प्रयागराज महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी भी उनके साथ थे।

जानकारी मिलने पर सभी ने खुद को होम क्वारंटाइन कर लिया था। इनके अलावा करीब दो दर्जन सभासदों और पार्टी कार्यकर्ताओं व सर्किटहाउस के कर्मचारियों ने भी खुद को होम क्वारंटाइन किया था। उधर यमुनापार महानगर अध्यक्ष विभवनाथ भारती भी कोरोना संक्रमित हैं। उनका भी इलाज लखनऊ में चल रहा है। उनके संपर्क में आने वाले पार्टी के कई पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने खुद को क्वारंटाइन किया हुआ है।

भारत में बनेंगी रूस की एके-203 राइफलें

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के तीन दिवसीय मॉस्को दौरे के दौरान भारत और रूस ने अत्याधुनिक एके-203 राइफल भारत में बनाने के लिए एक बड़े समझौते को अंतिम रूप दिया है

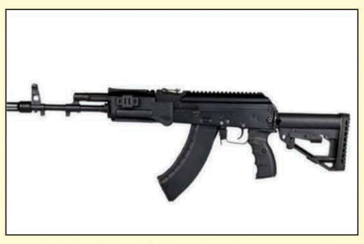

मॉस्को, पीटीआइ। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के तीन दिवसीय मॉस्को दौरे के दौरान भारत और रूस ने अत्याधुनिक एके-203 राइफल भारत में बनाने के लिए एक बड़े समझौते को अंतिम रूप दे दिया है। आधिकारिक रूसी मीडिया ने गुरुवार को यह जानकारी दी। एके-203 राइफल, एके-47 राइफल का नवीनतम और सर्वाधिक उन्नत प्रारूप है। यह 'इंडियन स्मॉल आ?र्म्स सिस्टम' (इनसास) 5.56 गुणा 45 मिमी राइफल की जगह लेगा।

रूस की सरकारी समाचार एजेंसी स्पुतनिक के मुताबिक भारतीय थल सेना को लगभग 7,70,000 एके-203 राइफलों की जरूरत है। इनमें से एक लाख का आयात किया जाएगा और शेष का विनिर्माण भारत में किया जाएगा। हालांकि, इस समझौते को अंतिम रूप दिए जाने की भारत सरकार की ओर से कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

रूसी समाचार एजेंसी के मुताबिक इन रायफलों को भारत में संयुक्त उद्यम भारत-रूस राइफल प्राइवेट लिमिटेड (आइआरआरपीएल) के तहत बनाया जाएगा। इसकी स्थापना आयुध निमार्णी बोर्ड (ओएफबी) और कलाशनीकोव कंसर्न तथा रोसोबोरेनेक्सपोर्ट के बीच हुई है। ओएफबी की आइआरआरल में 50.5 फीसद अंशधारिता होगी, जबकि कलाशनीकोव की 42 प्रतिशत हिस्सेदारी होगी। रूस की सरकारी निर्यात एजेंसी रोसोबोरेनेक्सपोर्ट की शेष 7.5 प्रतिशत हिस्सेदारी होगी।

खबर के मुताबिक उत्तर प्रदेश में कोरवा आयुध फैक्टरी में 7.62 गुणा 39 मिमी के इस रूसी हथियार का उत्पादन किया जाएगा। इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले साल किया था। प्रति राइफल करीब 1,100 डॉलर की लागत आने की उम्मीद है। इसमें प्रौद्योगिकी हस्तांतरण लागत और विनिर्माण इकाई की स्थापना भी शामिल है। इनसास राइफलों का इस्तेमाल 1996 से किया जा रहा है। उसमें जाम होने, हिमालय पर्वत पर अधिक ऊंचे स्थानों पर मैगजीन में समस्या आने जैसी परेशानियां पेश आ रही हैं। २२

बीएचयू के लापता छात्र मामले में एसएसपी पेश

22 को फिर हाईकोर्ट में हाजिर

प्रयागराज। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के लापता बीएससी द्वितीय वर्ष के छात्र शिवकुमार त्रिवेदी के मामले में बृहस्पतिवार को एसएसपी वाराणसी अमित पाठक हाईकोर्ट में पेश हुए।

उन्होंने बताया कि पुलिस द्वारा की गई छानबीन की रिपोर्ट कोर्ट में सीलबंद लिफाफे में पेश की जा चुकी है। मामले की सुनवाई कर रही न्यायमूर्ति शशिकांत गुप्ता और

न्यायमूर्ति शमीम अहमद की पीठ ने पुलिस की रिपोर्ट देखने के बाद याची अधिवक्ता सौरभ तिवारी को इसका जवाब दाखिल करने के लिए एक सप्ताह की मोहलत दी है। अपर शासकीय अधिवक्ता सैयद ने कोर्ट को बताया कि पुलिस द्वारा अब तक की गई जांच से संबंधित दस्तावेज कोर्ट में दाखिल कर दिए गए हैं। कोर्ट ने याची अधिवक्ता को पुलिस रिपोर्ट की फोटो कापी उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है। ताकि वह इसका जवाब दाखिल कर सकें। कोर्ट ने मामले की सुनवाई के लिए 22 सितंबर नियत करते हुए याची अधिवक्ता को रिपोर्ट पर जवाब देने का निर्देश दिया है।

हाईकोर्ट ने एसएसपी वाराणसी को अगली सुनवाई पर भी अदालत में उपस्थित रहने के लिए कहा है। एसएसपी की ओर अपर महाधिवक्ता विनोद कांत ने पक्ष रखा। याची अधिवक्ता का कहना है कि छह माह पूर्व लंका थाने की पुलिस शिव कुमार त्रिवेदी को बीएचयू से बुलाकर ले गई थी। इसके बाद से उसका कहीं कुछ पता नहीं है। पुलिस उसके बारे में जानकारी देने से इंकार कर रही है। परिवार वालों और बीएचयू प्रशासन की रिपोर्ट पर भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। जबकि पुलिस का कहना है छात्र को उसी दिन छोड़ दिया गया था। इसलिए उनको उसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। मामले की सुनवाई 22 सितंबर को होगी।

कुवैत से कच्चा तेल लेकर भारत आ रहे टैंकर में लगी आग

कोलंबो, पीटीआइ। कुवैत से कच्चा तेल लेकर भारत आ रहे एक टैंकर पोत में श्रीलंका के पूर्वी तट के पास आग लग गई। इस हादसे में पोत पर सवार चालक दल के 24 सदस्यों में से एक लापता है और एक घायल है। पनामा में पंजीकृत टैंकर न्यू डायमंड में लगी आग पर नियंत्रण पाने के लिए श्रीलंका की नौसेना द्वारा गुरुवार को सहायता मांगे जाने पर भारतीय तटरक्षक बल ने तुरंत ही अपने तीन पोत शौर्य, सारंग और समुद्र पहरेदार के अलावा एक डोद्गनयर विमान मदद के लिए भेजा। यह टैंकर कुवैत से दो लाख 70 हजार टन कच्चा तेल लेकर भारत आ रहा था। श्रीलंकाई नौसेना के प्रवक्ता कैप्टन इंदिका सिल्वा ने बताया कि अंपारा जिले के पूर्व में सांगामांकांडा के तट के पास टैंकर के इंजन कक्ष में आग लग गई। उन्होंने कहा कि बचाव अभियान के लिए चार पोत भेजे गए हैं। नौसेना के पोत पूर्वी बंदरगाह त्रिंकोमाली और दक्षिणी बंदरगाह हंबनटोटा से भेजे गए हैं। इसके अलावा हंबनटोटा में 31 अगस्त से डेरा डाले रूस के दो युद्धपोत भी आग पर काबू पाने के लिए रवाना हो गए हैं।

सिल्वा के अनुसार, जिस समय न्यू डायमंड के इंजन कक्ष में आग लगी, वहां चालक दल के 24 लोग मौजूद थे। दो के अलावा चालक दल के अन्य सभी सदस्य टैंकर से सुरक्षित बाहर आ गए और बचाव नौका पर हैं। समुद्री पर्यावरण संरक्षण प्राधिकार (एमईपीए) के अध्यक्ष धारशानी लहांदापुरा ने कहा कि आग बुझाने के लिए नौसेना के पोत को एक लाख लीटर पानी मुहैया कराया गया है। श्रीलंका वायुसेना ने भी बचाव अभियान में एक हेलीकॉप्टर तैनात किया है।

अभी हाल ही में जापान का तेल जहाज एमवी वाकाशिओ 25 जुलाई को मॉरीशस के दक्षिण पूर्वी तट के पास मूंगे की चट्टान से टकरा गया था। इस टक्कर के चलते जहाज के निचले भाग में दरारें पड़ गई थीं जिससे यह दो हिस्सों में टूट गया था। इसमें चार हजार टन तेल लदा था, जिसमें से एक हजार टन तेल पहले ही समुद्र में बह गया था। भारत ने जापानी जहाज से तेल रिसाव के चलते पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहे मॉरीशस को मदद भेजी थी। मॉरीशस ने हालात से निपटने के लिए भारत से मदद मांगी थी। मॉरीशस के अनुरोध करते ही समुद्र में तेल के फैलाव को रोकने के लिए भारत ने वायुसेना के विमान से 30 टन उपकरण व सामग्री के साथ ही एक विशेष टीम भेजी थी। मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद जगन्नाथ देश के लिए इसे गंभीर खतरा बताते हुए पर्यावरणीय आपातकाल की घोषणा की थी। जिस क्षेत्र में तेल बहा था वह कछुओं समेत दुर्लभ प्रजाति के समुद्री जीव जंतुओं का घर माना जाता है।

चीन की हर गतिविधि पर है नजर, माकूल जवाब देने में सक्षम हैं सेनाएं : जनरल रावत

नई दिल्ली, एजेंसियां। भारतीय सेनाएं चीन की आक्रामकता का माकूल जवाब देने में सक्षम हैं। पूर्वी लद्दाख में चीन से तनातनी के बीच चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल बिपिन रावत ने गुरुवार को यह बात कही। यूएस-इंडिया स्ट्रेटजिक पार्टनरशिप फोरम के एक सत्र को संबोधित करते हुए जनरल रावत ने कहा कि चीन की हर गतिविधि पर भारत की नजर है। तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में राजमार्ग और रेल लाइन समेत चीन की इन्फ्रा परियोजनाओं की भारत निगरानी कर रहा है। भविष्य में चीन को लेकर भारत की रणनीति में इन सभी गतिविधियों से पड़ने वाले असर को ध्यान में रखा जाएगा।

सीडीएस जनरल बिपिन रावत ने कहा है कि हम अपनी सीमाओं पर शांति चाहते हैं लेकिन हम चीन की उकसावे वाली कार्रवाईयों से निपटने में भी सक्षम हैं

सीडीएस ने पाकिस्तान को भी चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि चीन के साथ तनातनी के माहौल का फायदा उठाकर अगर पाकिस्तान ने कोई हरकत की, तो उसे बहुत भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। पाकिस्तान की किसी भी हरकत का जवाब देने की पूरी तैयारी है। जनरल रावत ने जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को बढ़ावा देने की पाकिस्तान की हरकतों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, 'उत्तर और पश्चिम में भी हम सीमा विवाद का सामना कर रहे हैं। इसलिए सेना की भूमिका अहम है। हमारी सेनाओं को किसी भी संकट से तत्काल निपटने में सक्षम होने और भविष्य के लिए तैयार रहने की जरूरत है।' भारत के समक्ष मौजूदा सुरक्षा चुनौतियों का जिक्र करते हुए जनरल रावत ने कहा कि भारत बहुत जटिल चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिसमें परमाणु से लेकर अन्य पारंपरिक खतरे तक शामिल हैं। उन्होंने कहा, 'पूर्व, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में चीन का बढ़ता दखल और हिंद महासागर क्षेत्र की गतिविधियां तथा पाइरेसी, समुद्री आतंकवाद, मानव तस्करी और जैव आतंकवाद जैसे गैर पारंपरिक खतरे सीधे तौर पर भारत के हितों को प्रभावित कर रहे हैं।' इस बीच सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवणे लद्दाख के अपने दो दिवसीय दौरे पर पहुंचे हैं। सूत्रों की मानें तो पेगोंग लेक के दक्षिणी तट के आस-पास यथास्थिति को बदलने की चीन की कोशिशों को ध्यान में रखते हुए क्षेत्र में सुरक्षा स्थिति की व्यापक समीक्षा के लिए सेना प्रमुख का यह दौरा हो रहा है। क्षेत्र में सैनिकों की तैनाती का निरीक्षण कर रहे सेना के शीर्ष कमांडर सेना प्रमुख नरवाने को ताजा हालात को लेकर भारत की तैयारी से अवगत कराएंगे। बीते दिनों पेगोंग झील इलाके में तब तनाव बढ़ गया था जब चीन ने कुछ स्थानों पर कब्जा करने कोशिश की थी, जिसे सेना ने नाकाम कर दिया था।

ग्रामीण अंचल

संक्षेप समाचार

करंट की चपेट में इलेक्ट्रीशियन की मौत

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के चका गांव का एक युवक जो झूसी खान मार्केट में काम कर रहा था हाई वोल्टेज की चपेट में आने से उसकी मौके पर मौत हो गई। वही सूचना पर पहुंचे परिजनों ने शव को घर लाकर दाह संस्कार किया। चका गांव निवासी हलीम अंसारी जो बस कंडक्टर से रिटायर्ड हैं। उनका बेटा मोबिन अंसारी 30 वर्ष जो इलेक्ट्रिशियन का काम करता था। गुरुवार दोपहर झूसी के खान मार्केट में काम कर रहा था छत पर कार्य के दरमियान छत के ऊपर से गई हाई वोल्टेज करंट की चपेट में आ जाने से मौके पर मौत हो गई।वहीं सूचना पर पहुंचे परिजनों ने शव को घर लेकर दाह संस्कार किया। परिजनों द्वारा पुलिस को सूचना नहीं दिया गया था। ना ही कोई कानूनी कार्रवाई चाहते हैं। वही मोबिन तीन भाइयों में से तीसरे नंबर पर था। चार बहने भी हैं। बेटे की मौत से मां समेत परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया है।

सेवानिवृत्त सैनिक ने गोली मारकर की अत्महत्या

प्रयागराज। बारा थाना क्षेत्र के गौहानी कूड़ी गांव में गुरुवार सुबह एक वृद्ध ने अपनी लाइसेंसी बन्दूक से गोली मारकर आत्महत्या कर ली। पड़ोसियों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई की। आत्महत्या की वजह तनाव बताया जा रहा है।

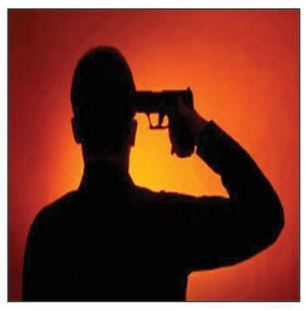

बारा के गौहानी कूड़ी गांव निवासी शिव प्रताप सिंह उर्फ कन्हैयालाल सिंह सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद घर पर अकेला रहे रहे थे। उसके दो बेटे और एक बेटी है। सभी की शादी हो चुकी है। दोनों बेटे जितेंद्र प्रताप सिंह और बबलू सिंह अपने परिवार के साथ दिल्ली में रहते हैं। बेटी अपने ससुराल में बच्चों के साथ रहती है। वह अपने पैतृक गांव में अकेले ही रहते थे। बताया जा रहा है कि गुरुवार की सुबह शिव प्रताप ने अपनी लाइसेंसी दो नाली बन्दूक से गोली मारकर आत्महत्या कर ली। गोली की आवाज सुनकर पड़ोसी पहुंचे तो वह खून से लथपथ मिले और पास ही बन्दूक पड़ी थी। ग्रामीणों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई की। पुलिस कहना है कि ग्रामीणों ने पूछताछ के दौरान बताया कि वह इससे पूर्व भी दो बार अत्महत्या की कोशिश कर चुका थे। गुरुवार की सुबह तेजी शोर मचा रहा था कि भोलेनाथ मैं आप के पास आ रहां हूं। जिसके बाद उसने खुद को गोली मार ली। अपर पुलिस अधीक्षक यमुनापार चक्रेश मिश्रा ने बताया कि गुरुवार की सुबह एक वृद्ध ने गोली मारकर आत्महत्या कर ली। पुलिस मौके पर पहुंचकर विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है।

ससुर दामाद के बीच पैसों के लेन-देन को लेकर तोड़ फोड़, चली गोली

मऊआइमा। पैसो के लेन-देन को लेकर ससुर दामाद के बीच जम कर मारा मारी हुई तथा कार क्षतिग्रस्त कर हवा में दहशत फैलाने के लिए गोली चलाई गई। दोनों ने एक दूसरे के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार नवाबगंज थाना क्षेत्र के ग्राम उठगी निवासी विपिन कुमार पटेल पुत्र मान सिंह की ससुराल मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम चकश्याम उर्फ पूरे हिंचा में है । विपिन कुमार का आरोप है कि उसके ससुर लाल बहादुर पटेल और साले युवराज सिंह पटेल उससे ढाई लाख रुपये उधारी पैसा लिए थे। जब वह मांगने आया तो साले और ससुर ने पैसा न देने की बात कही। और उसे मारे पीटे तथा जान से मारने की धमकी भी दिए । विपिन कुमार पटेल ने अपने ससुर लाल बहादुर पटेल और साले युवराज सिंह पटेल के खिलाफ मऊआइमा थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। उधर ससुर लाल बहादुर पटेल पुत्र स्वर्गीय राम पाल पटेल ग्राम चकश्याम उर्फ पूरे हिंचा निवासी ने अपने दामाद विपिन कुमार पटेल के ऊपर आरोप लगाया है कि वह कतिपय लोगों के साथ असलाह लेकर घर पर चढ कर गालियां दी तथा जाने से मारने की धमकी देने लगा मना करने पर दहशत फैलाने के लिए हवा में तीन फायर कर गांव में भय पैदा कर उनकी कार को क्षतिग्रस्त कर असलहा से धमकाते हुए भाग गए। लाल बहादुर ने मऊआइमा थाने में अपने दामाद विपिन कुमार और दामाद के भाई बडके दो आज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

मास्क ना लगाने पर एक दर्जन लोगों पर कार्यवाई

शंकरगढ़। बिना मास्क के घर से बाहर निकलने वाले लोगों पर अब पुलिस के साथ नगर पंचायत के कर्मी भी चालान करेंगे। ऐसे में अब अपनी जेब ढीली होने से बचने के लिये मास्क अवश्य लगाएं। गुरुवार को नगर पंचायत शंकरगढ़ की टीम ने करीब एक दर्जन लोगों का चालान काटा और सख्त हिदायत देते हुए दूसरी बार पकड़े जाने पर अधिक जुमार्ना वसूलने की बात कही गई इस दौरान जागरूक करते हुए लोगों को मास्क भी बांटा गया। यह प्रक्रिया दिनभर कस्बे के कई चौराहों पर चली।

बिना मास्क के चलने वालों का चालान काटते नगर पंचायत कर्मी

बता दें कि एडीएम (नगर) प्रयागराज द्वारा किए गए आदेश के क्रम में नगर पंचायत शंकरगढ़ के कर्मियों द्वारा कस्बे के रामभवन चौराहा, सेननगर आदि मोहल्लों में मास्क न पहनने वालों के खिलाफ अभियान चलाया गया। नगर पंचायत शंकरगढ़ के ईओ द्वारा बिना मास्क पहने लोगों को मास्क पहनकर बाहर निकलने की अपील की गई।ईओ शेर बहादुर के नेतृत्व में चले अभियान में करीब एक दर्जन लोगों का चालान काटकर जुमार्ना वसूला गया और मास्क देकर ना लगाने पर अगली बार कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी गई।ईओ शेर बहादुर ने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान भी लोग सोशल डिस्टेंसिंग का पालन और बाहर निकलने पर मास्क नहीं लगा रहे हैं,जिससे संक्रमण के फैलने का खतरा हर समय बना रहता है। इन्होंने लोगों से अपील किया कि आप लोग कोरोना संक्रमण की गंभीरता को समझें और इससे बचने का हर संभव उपाय करें।ईओ ने बताया कि यह कार्रवाई आगे भी लगातार जारी रहेगी। इस अभियान में ईओ शेर बहादुर संग लिपिक प्रदीप कुमार, रफीक अहमद, मनीष केसरवानी, अखिलेश द्विवेदी, दीपू शुक्ला व सिपाहीगण मौजूद रहे।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा को अवमानना नोटिस जारी

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने निदेशक माध्यमिक शिक्षा विनय कुमार पाण्डेय को अवमानना नोटिस जारी की है और 30 सितंबर तक हाईकोर्ट के आदेश की अनुपालन की सूचना देने का निर्देश दिया है। गाँव सभा की चारागाह की सार्वजनिक भूमि पर बने सुख्खू मां प्रभु देवी इंटर कालेज गोल्हागौर तहसील शाहगंज, जिला जौनपुर की मान्यता रद्द करने की शिकायत पर कोर्ट ने निर्णय लेने के आदेश दिया था। जिसकी अवहेलना करने पर अवमानना याचिका दाखिल की गयी है। यह आदेश न्यायमूर्ति के जे ठाकर ने चंद्र प्रताप व अन्य की याचिका पर दिया है। याचिका पर अधिवक्ता आर एन यादव व अभिषेक यादव ने बहस की। कोर्ट ने जनहित याचिका पर निदेशक को तीन माह मे फर्जी दस्तावेज पर अवैध रूप से चल रहे कालेज की मान्यता रद्द करने की मांग को निर्णीत करने का निर्देश दिया था। जिसका पालन नहीं किया गया।

हाईकोर्ट ने लोगों से मास्क पहनने व सोसल डिस्टेन्सिंग नियमों के पालन की अपील की

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा है कि अर्थ व्यवस्था को दुबारा पटरी पर लाने के लिए लागू अनलाक 4 के बाद कोरोना संक्रमण फैलने की आशंका को देखते हुए गाइडलाइन का ठीक से पालन करना जरूरी है। कोर्ट ने आम लोगों से अपील की है कि घर से बाहर बिना मास्क पहने न निकले और सामाजिक, शारीरिक दूरी बनाये रखते हुए अपना कार्य करे। यह आदेश न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा तथा न्यायमूर्ति अजित कुमार की खंडपीठ ने कोरेन्टाइन सेन्टर एवं अस्पतालों की दशा सुधारने के लिए कायम जनहित याचिका पर दिया है। कोर्ट ने राज्य सरकार को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की स्वास्थ्य व्यवस्था दुरूस्त करने और कोविड अस्पतालों की संख्या बढ़ाने की योजना का ब्लू प्रिंट तैयार कर पेश करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा है कि जरूरी सेवाओं को अनिवार्य रूप से लागू किया जाय। कोर्ट ने प्रयागराज के 80 वार्डो के सभासदों के प्रयासों एवं लोगो के सहयोग का निरीक्षण कर रिपोर्ट पेश करने के लिए राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव को 4 वार्ड पर एक एडवोकेट कमिश्नर नियुक्त करने का निर्देश दिया है। वह नगर निगम के जोनल अधिकारी को रिपोर्ट करेंगे। कोर्ट ने जिला प्रशासन को सौ से अधिक लोगों की भीड़ वाले एरिया में सीसीटीवी कैमरे लगाने और इसकी निगरानी जोनल अधिकारी को सौपने का निर्देश दिया है, जो एसएसपी को रिपोर्ट करेंगे और एसएसपी लापरवाह पुलिस अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करे। कोर्ट ने कटरा के सभासद अजय यादव की तारीफ की है। उन्होंने कोर्ट आदेश का पालन करने का आश्वासन दिया है। कोर्ट ने अन्य सभासदों से ऐसी ही उम्मीद जतायी है। मुख्य सचिव ने कोर्ट के आदेश के अनुपालन में हलफनामा दाखिल किया। कोर्ट ने सोसल डिस्टेन्सिंग का पालन करने एवं बिना मास्क के घर से बाहर न जाने का आदेश दिया है। सभी वकीलों से कहा है कि वे न्यायालय परिसर में मास्क पहनकर आये और पहने रहे। याचिका की अगली सुनवाई 7 सितम्बर को होगी। कोर्ट ने राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव, जिलाधिकारी प्रयागराज, नगर आयुक्त नगर निगम प्रयागराज से आदेश के अनुपालन की रिपोर्ट मांगी है।

हाईकोर्ट बार दावा अधिकरण की लड़ाई में जनप्रतिनिधियों का लेगा साथ

प्रयागराज। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन प्रयागराज के जनप्रतिनिधियों को दावा अधिकरण की लड़ाई में साथ लेगा। स्थानीय सांसदों, विधायकों और सभासदों को लेकर प्रयागराज से लगातार महत्वपूर्ण कार्यालयों को हटाने के खिलाफ भी लड़ाई छेड़ी जाएगी। बार एसोसिएशन की बृहस्पतिवार को हुई बैठक में इस मुद्दे पर गंभीरता से विचार करने के बाद तय किया गया कि शीघ्र से शीघ्र जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक कर रणनीति तय की जाएगी। बैठक में कहा गया कि राज्य सरकार लगातार प्रयागराज से सौतेला व्यवहार कर रही है। इससे पूर्व कई महत्वपूर्ण कार्यालयों पुलिस मुख्यालय, राजस्व परिषद, एजी ऑफिस आदि को प्रयागराज से हटाया जा चुका है। दावा अधिकरण विधेयक का हाईकोर्ट के वकील शुरू से विरोध कर रहे हैं। इसे लेकर जनहित याचिका भी दाखिल की गई है मगर सरकार ने आज तक उस पर जवाब दाखिल नहीं किया है। इसके विपरीत सरकार ने आनन फानन में एक ही दिन में बिना चर्चा कराए बिल पास करा लिया। इन सवालों को सभी दलों के सांसदों, विधायकों और सभासदों के साथ चर्चा कर निर्णय लिया जाएगा। बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ उपाध्यक्ष जमील अहमद आजमी और संचालन महासचिव प्रभाशंकर मिश्र ने किया। बैठक में अजय कुमार मिश्र जयहिंद, अनिल पाठक, रजनीकांत राय, केके मिश्र, अंजू श्रीवास्तव, अभिषेक शुक्ला, दिलीप कुमार पांडेय, राजेंद्र कुमार सिंह, मंजू कुमारी, दुर्गेश चंद्र तिवारी सहित कार्यकारिणी के सभी सदस्य मौजूद थे।

सैदाबाद में अधेड़ मिला कोरोना पॉजेटिव

सैदाबाद। सैदाबाद में किराना दुकानदार कोरोना पॉजेटिव पाया गया है। प्रशासन ने दुकान को सीज कर दिया है। लेकिन आसपास की दुकाने सीज ना होने से लोगो मे भय ब्याप्त है। प्रशासन द्धारा कुछ दिन पूर्व कस्बे के ब्यापारियो से कोरोना जॉच कराने के लिए कहा गया था। सैदाबाद स्थित सीएचसी में किराना दुकानदार अधेड़ की जॉच की गई। जांच में अधेड़ कोरेाना पॉजेटिव पाया गया। प्रशासन ने दुकान सीज कर दी। लेकिन आसपास की दुकाने लगातार खुल रही है। स्थानीय ब्यापारियो ने बताया कि नियमतः सौ मीटर के दायरे की सभी दुकाने बंद होनी चाहिए लेकिन प्रसाशन केवल पॉजेटिव दुकानदार की दुकान ही बंद करवा रहा है।

कोरोना पॉजिटिव मिलने के बाजार में पसरा सन्नाटो

सैदाबाद सीएचसी प्रभारी डा राजेश श्रीवास्तव ने बताया कि अधेड़ को होम क्वारंटीन कर दिया गया है। लगातार जौच की जा रही है।

दलित को मार पीट कर किया गया जख्मी तीन के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। जमीनी विवाद को ले कर दलित को जति सूचक गालियो से नवाजा गया तथा मार पीट कर विपक्षियो द्वारा जख्मी कर दिया गया।भुक्त भोगी की तहरीर पर पुलिस ने तीन के विरुद्ध अभियोग पंजीकृत कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के हरक पुर गांव निवासी ओम प्रकाश सरोज पुत्र राम आसरे का कथन है कि जमीनी विवाद को लेकर पड़ोसियों ने उसे जाति सूचक गालिया देने लगे विरोध करने पर मार पीट कर जख्मी करदिये और कहे की थाना पुलिस किया तो जान से मार दे गे।जख्मी ओम प्रकाश की तहरीर पर पुलिस ने गांव के ही सुनील कुमार विश्वकर्मा, अनिलकुमार विश्वकर्मा, आयुष विश्वकर्मा पत्र गण राम बहादुर के विरुद्ध एस सी एस टी सहित विभिन्न धाराओं में अभियोग दर्ज कर के जख्मी ओम प्रकाश को इलाज के लिए सी एच सी भेज दिया है।

यूपी में डेयरी नियंत्रण कानून का कड़ाई से अनुपालन की याचिका, कोर्ट ने मांगा जवाब

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने डेयरी नियंत्रण कानून को कड़ाई से लागू करने तथा जानवरों को डेयरी मे ही सुरक्षित रखने की मांग में दाखिल जनहित याचिका पर राज्य सरकार से जवाब मांगा है । यह आदेश न्यायमूर्ति शशिकान्त गुप्ता तथा न्यायमूर्ति शमीम अहमद की खंडपीठ ने फेडरेशन आफ इंडियन एनीमल प्रोटेक्शन संगठन की जनहित याचिका पर दिया है। याची का कहना है कि सभी जीवों को जीने व कानून की सुरक्षा पाने का अधिकार है। किन्तु प्रदेश की डेयरियों की बदतर हालत है। राज्य डेयरियों की सही प्रबंधन नहीं किया जा रहा है। जिससे दूध की गुणवत्ता में कमी एवं पर्यावरण प्रदूषण फैल रहा है। जानवरों के आराम करने के स्थान की कमी है। याची का कहना है कि डेयरी कानून का यूपी में कड़ाई से पालन किया जाय। पालन न करने से जानवरों के जीवन के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। बूढे एवं बच्चों के बेहतर प्रबंधन की व्यवस्था की जाय। याचिका की सुनवाई 3 अक्तूबर को होगी।

पंचायत भवन की जमीन पर हुए अतिक्रमण को खाली कराया गया

बरौत। हड़िया सर्किल के सरायममरेज थाना क्षेत्र के मीठापुर गाँव मे पंचायत भवन के लिए कुछ दिन पहले जमीन चिन्हित की गई थी। इस पर कुछ लोगों ने अतिक्रमण कर लिया था। कई बार अतिक्रमण को हटाने के लिए कहां गया लेकिन कोई नहीं सुना और न ही अतिक्रमण को हटाया। उच्चाधिकारियों के निर्देश पर बुधवार की शाम पंचायत भवन के लिये चिन्हित भूमि पर हुये अवैध अतिक्रमण हटाने गये तहसीलदार राजस्व टीम व पुलिस पर कब्जा करने वालों ने पथराव शुरू कर दिया। पथराव करने वालो पर तहसीलदार के तहरीर पर देर शाम 18 नामजद व 35 अज्ञात के खिलाफ कई गंभीर धाराओ मे पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर कई आरोपितो को गिरफ्तार कर पूछताछ कर रही। गुरुवार को उपजिलाधिकारी हड़िया सुभाष चन्द्र यादव, सी ओ हंड़िया माजिद अब्सार, तहसीलदार राम प्रसाद त्रिपाठी, कोतवाल हंडिया शमशेर बहादुर सिंह, एस ओ सरायममरेज भरत कुमार, खंड विकास अधिकारी मृदुला धनूपुर ए डी ओ पंचायत प्रमोद कुमार मिश्र भारी संख्या मे सफाईकर्मी महिला पुरूष कांस्टेबल ने पंचायत भवन के चिन्हित भूमि से अवैध अतिक्रमण जे सी बी द्वारा हटवा कर पंचायत भवन के निर्माण हेतु नींव को खोदवाया गया। इस मौके पर भारी संख्या में पुलिस फोर्स, तहसील कमी, ब्लाक कमी, ग्रामीण मौजूद रहे।

अतिक्रमण हटवाते विभागीय अधिकारी

रंग निर्देशक की स्मृति में शोकसभा

करछना। अपने रंग निर्देशन को लेकर अनुपम आनंद ने देश मे प्रयाग की एक अलग पहचान बनाई। उनके लोक जीवन में रंगकर्मियो को जोडने और उन्हे एक सजीदा कलाकार का रूप देने की यादे प्रयागराज की इस परम्परा मे हमेशा रची बसी रहेंगी। उनके निधन से रंगमंचो में आया सूनापन काफी समय तक स्मृतियो मे ताजा रहेगी। प्रयाग के प्रसिद्ध रंगनिर्देशक अनुपम आनंद के निधन पर करछना के साधुकूटी मे आयोजित स्मृति सभा के दौरान यह बाते हास्य कवि एवं लोककलाकार अशोक बेशरम ने कही।कवियो और साहित्यकारो ने कहा कि उनके चले जाने से न सिर्फ रंगकर्मी आडत है बल्कि लोककला साहित्यएसंगीत और शिक्षा से जुडे समाज के लिए भी यह सूनापन एक मायूसी देकर चला गया।अपने अनुजो के साथ उनका व्यवहारएसरल स्वाभाव और सैकडो कलाकारो को तराशने वाला अनुपम का लोकजीवन उनके न रहने पर भी रंगमंच को सदैव प्रेरणा देता रहेगा। सभी ने दो मिनट का मौन रख दिवंगत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की। इस मौके पर क्षेत्र के कवि कलाकारएसाहित्यकार और प्रबुद्धजन मौजूद रहे।

हाईकोर्ट समाचार

कान्सटेबिल भर्ती में सफल होने के बाद भी चयन न करने पर याचिका

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कांस्टेबल भर्ती 2018 की शारीरिक दक्षता परीक्षा में सफल घोषित होने के बावजूद चयनित नहीं किये जाने को लेकर दाखिल याचिका को सुनवाई के लिए 9 सितम्बर को पेश करने का निर्देश दिया है। हाईकोर्ट ने सरकारी अधिवक्ता को सुप्रीम कोर्ट के राम कुमार गिरोजया केस पढ़ कर पक्ष रखने का समय दिया है। याची अधिवक्ता प्रशांत मिश्र का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि प्रोविजनल चयन सूची जारी होने से पहले अन्य पिछड़ा वर्ग प्रमाणपत्र जमा किया जा सकता है। जिस पर एकलपीठ ने विचार नहीं किया है। जिस पर यह विशेष अपील दाखिल की गई है। यह आदेश मुख्य न्यायाधीश गोविन्द माथुर तथा न्यायमूर्ति एस.डी सिंह की खंडपीठ ने अनस अनवर की विशेष अपील पर दिया है। याची का कहना है कि परीक्षा में सफल घोषित होने के बावजूद अंतिम परिणाम में उसे शामिल नहीं किया गया है। जाति प्रमाणपत्र समय से न पेश करने के आधार पर ऐसा किया गया है। जबकि याची ने परिणाम घोषित होने से पहले प्रमाणपत्र जमा कर दिया था।

खनन और पेड़ लगाने की शर्त के उल्लंघन पर वसूली कार्रवाई पर हस्तक्षेप से इंकार, याचिका खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पांच साल का खनन पट्टे का इस्तेमाल करने के बावजूद 210 पेड़ लगाने की शर्त का पालन न करने पर जारी वसूली नोटिस पर हस्तक्षेप करने से इंकार कर दिया है। 6 दिसम्बर 19 को जिलाधिकारी मिजार्पुर ने पेड़ की मालियत 6 लाख 30 हजार रुपए की वसूली कार्यवाही करने का आदेश दिया है। जिसकी वैधता को चुनौती दी गयी थी। यह आदेश न्यायमूर्ति सुनीता अग्रवाल तथा अजय भनोट की खंडपीठ ने ठेकेदार सुशील कुमार सिंह की याचिका पर दिया है। याचिका का प्रतिवाद राज्य सरकार के अधिवक्ता ने किया। चुनार के सेमरा गाव के निवासी याची के पक्ष में तहसीलदार ने 5 एकड जमीन का बालू, पत्थर खनन ठेका 5 वर्ष के लिए स्वीकृत किया। ठेके की शर्त थी कि खनन कर वह 210 पेड लगायेंगे। खनन कर लिया किन्तु कोई पेड़ नहीं लगाया गया। कहा कि पेड़ लगाये थे, जानवरों ने नष्ट कर दिया है। जांच के बाद जिलाधिकारी ने लगने वाले पेड़ों की कीमत का आंकलन कराया और याची से वसूली का निर्देश दिया है। 6 दिसम्बर 2001 से 5 दिसम्बर 2006 तक पेड लगाये जाने थे। एक भी पेड़ जमीन पर नहीं है। इसका खुलासा आडिट रिपोर्ट में हुआ। याची यह दस्तावेज नहीं दिखा सका कि उसने पेड़ लगाये थे। केवल यही कहा कि उसे सुने बगैर आडिट रिपोर्ट पर वसूली की जा रही है। कोर्ट ने कहा कि पेड़ लगाने की शर्त खनन के बाद भूमि का विकास करने के लिए लगायी गयी थी। ऐसे मामले में हस्तक्षेप नही किया जा सकता। कोर्ट ने याचिका खारिज कर दी है ।

रिलायंस जियो इंफोकाम के खिलाफ जांच की मांग में याचिका

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मेसर्स रिलायंस जियो इंफोकाम लिमिटेड कंपनी द्वारा सुरक्षा गाइडलाइन के खिलाफ अनापत्ति लिए बगैर विद्युत पोल पर वाई फाई बूस्टर एम्प्लीफायर लगाने की जांच की मांग में दाखिल याचिका पर राज्य सरकार व डायरेक्टर विद्युत सुरक्षा प्रयागराज से 4 हफ्ते में जवाब मांगा है। याचिका की सुनवाई 5 अक्तूबर को होगी। यह आदेश न्यायमूर्ति प्रीतिंकर दिवाकर तथा न्यायमूर्ति एम.सी त्रिपाठी की खंडपीठ ने अधिवक्ता अरूण मिश्र की याचिका पर दिया है। याची का कहना है कि वाई फाई स्पीड में तेजी लाने के लिए रिलायंस जियो इंफोकाम लिमिटेड विभूति खंड लखनऊ ने प्रयागराज में विद्युत पोल पर केबल बिछा रहा है। पोल पर बूस्टर एम्प्लीफायर भी लगा रहा है। इसके लिए पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम की अनापत्ति भी नहीं ली गयी है। लोगों की सुरक्षा से खिलवाड़ किया जा रहा है। इसकी शिकायत याची ने डिप्टी डायरेक्टर इलेक्ट्रिक सुरक्षा से की है। किन्तु कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है। बिजली विभाग खुद सुरक्षा गाइडलाइन का पालन नहीं कर रहा है। राज्य सरकार को पूरे प्रकरण की जांच कराने का समादेश जारी करने की मांग की गयी है।

सचिव बेसिक शिक्षा परिषद आदेश का पालन करे या हाजिर हो : हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 68500 सहायक अध्यापक भर्ती परीक्षा में सफल घोषित होने और कोर्ट के काउन्सिलिंग मे बुलाने के आदेश के बावजूद बेसिक शिक्षा परिषद प्रयागराज द्वारा आदेश का पालन न करने पर कड़ी फटकार लगायी है। कोर्ट ने 14 सितम्बर तक आदेश पालन करने का अंतिम अवसर दिया है। कोर्ट ने कड़ा रूख अपनाते हुए कहा है कि यदि आदेश का पालन नहीं किया गया तो बोर्ड के सचिव 15 सितम्बर को कोर्ट में हाजिर हो। यह आदेश न्यायमूर्ति पंकज भाटिया ने नेहा परवीन की याचिका पर दिया है। कोर्ट ने अपने 30 जुलाई 20 के आदेश से याची को काउन्सिलिंग के लिए बुलाने का निर्देश दिया था। इससे पहले कोर्ट के आदेश पर याची को एक अंक दिया गया था और वह एक अंक मिलने के कारण सहायक अध्यापक की नियुक्ति के योग्य हो गयी थी। बोर्ड ने न तो याची को काउन्सिलिंग के लिए बुलाया और न ही जवाबी हलफनामा दाखिल किया। इसे कोर्ट ने गंभीरता से लिया है।

नियुक्ति के डीम्ड अनुमोदन पर वेतन भुगतान न करने पर राज्य सरकार से जवाब तलब

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अमरदीन इंटर कालेज चंदौली में अंशकालिक एलटी ग्रेड अध्यापक के नियुक्ति का अनुमोदन करने से इंकार करने के जिला विद्यालय निरीक्षक के आदेश की वैधता की चुनौती याचिका पर राज्य सरकार से छह सप्ताह में जवाब मांगा है और 8 दिसम्बर को सुनवाई के लिए पेश करने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति पंकज भाटिया ने कपिल देव सिंह यादव की याचिका पर दिया है। याचिका के अनुसार याची की नियुक्ति अंशकालिक टीचर के पद पर विज्ञापन के जरिए प्रबंध समिति द्वारा 6 जुलाई 98 को की गयी थी। इस नियुक्ति की अनुमोदन के लिए डीआईओएस को भेजा गया। याची अधिवक्ता का कहना है कि कानून के तहत सात दिन मे अनुमोदन पर निर्णय न लेने पर डीम्ड अनुमोदन मान लिया जायेगा। ऐसे में वेतन भुगतान किया जाना चाहिए। फिर भी वेतन भुगतान नहीं किया गया तो याचिका दाखिल की गयी। कोर्ट ने जिला विद्यालय निरीक्षक को याची के वेतन भुगतान पर निर्णय लेने का निर्देश दिया। किन्तु निरीक्षक ने नियुक्ति की वैधता पर सवाल उठाते हुए प्रत्यावेदन निरस्त कर दिया। इस कारण दुबारा याचिका दाखिल की गयी। कोर्ट ने निरीक्षक का आदेश रद्द करते हुए नये सिरे से निर्णय लेने का निर्देश दिया और कहा कि नियुक्ति के 19 साल बाद सवाल उठाना उचित नहीं है। इसके बावजूद निरीक्षक ने वेतन भुगतान करने से इंकार कर दिया है। जिसे तीसरी बार चुनौती दी गयी है। याची के अधिवक्ता का कहना है कि डीम्ड (स्वतः) अनुमोदन पर वेतन भुगतान किया जाना चाहिए। सरकार ने 2016 मे कठिनाई निवारण आदेश के तहत 1999 से पहले के अंशकालिक अध्यापकों की सेवा नियमित करने का निर्देश दिया है। इस आधार पर याची की सेवा नियमित कर वेतन भुगतान किया जाना चाहिए।

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

हर रोज बढ़ रहा है गंगा जमुना का जल स्तर, सतर्क हुआ जिला प्रशासन

प्रयागराज। गंगा जमुना का जल स्तर हर रोज बढ़ता ही जा रहा है प्रशासन की ओर से बाढ़ की चेतावनी दी जा रही है। बाढ़ से निपटने के लिए जिला प्रशासन मुस्तैद है। इंडिया रेप की टीम गंगा घाटों के आसपास तैनात है' ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि देर रात तक गंगा यमुना का जलस्तर कहीं खतरे के निशान तक न आ जाएं। हालांकि प्रयागराज जिला प्रशासन मुस्तैद है राहत शिविरों के लिए स्कूलों में भी साफ सफाई का काम तेजी से चल रहा है। जिला प्रशासन की ओर से इस बार 135 आश्रय स्थल तैयार किए गए हैं। जरूरत पड़ने पर लोगों को बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों से यहां पर रहने के लिए भेजा जाएगा।

मण्डलायुक्त ने राष्ट्रीय राजमार्गों की समीक्षा में दिया आवश्यक निर्देश

प्रयागराज। मण्डलायुक्त आर रमेश कुमार गुरूवार को गांधी सभागार में राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण कार्य एवं चैड़ीकरण के कार्यों की प्रगति समीक्षा करते हुए एनएचआई सहित अन्य सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई पूर्ण करते हुए सड़क निर्माण तथा चैड़ीकरण के कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय से पूर्ण कराने का निर्देश दिया है।

समीक्षा बैठक करते मण्डलायुक्त

उन्होंने राजस्व विभाग, विद्युत विभाग, वन विभाग तथा एनएचआई को आपस में समन्वय स्थापित कर तथा समस्त औपचारिकतायें पूर्ण कराते हुए निर्माण कार्यों को पूर्ण कराये जाने के लिए कहा। बैठक में एनएचआई के अभियंता ने बताया कि प्रतापगढ़-प्रयागराज-चित्रकूट राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण कार्य इसी माह में शुरू हो जायेगा। चकेरी-प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग के निर्माण हेतु सभी औपचारिकतायें पूर्ण कराते हुए निर्माण कार्य शीघ्रता से कराये जाने का निर्देश दिये है। मण्डलायुक्त ने फाफामऊ के मलाक हरहर से बनने वाले छह लेन पुल मार्ग निर्माण के सम्बंध में समस्त औपचारिकतायें पूरी कराते हुए निर्माण कार्य समय से प्रारम्भ किये जाने का निर्देश दिया। साथ ही सोरांव से आनंद भवन तक सड़क के चैड़ीकरण कार्य को शीघ्रता से कराये जाने का निर्देश दिया। हंडिया-बनारस मार्ग के निर्माण कार्य के सम्बंध में एनएचआई के अधिकारियों ने कहा कि निर्माण कार्य में कोई समस्या नहीं है। यह कार्य अक्टूबर माह तक पूर्ण कर लिया जायेगा। मण्डलायुक्त ने सभी सम्बंधित अधिकारियों को आपसी समन्वय स्थापित करते हुए पूर्ण मनोयोग के साथ परियोजनाओं को गुणवत्ता एवं समयबद्धता के साथ पूर्ण कराये जाने के लिए कहा है। इस अवसर पर एडीएम नजूल गंगाराम गुप्ता, प्रभागीय वनाधिकारी वाई.पी शुक्ला, एचएनआई व पीडब्लूडी के अभियंतागणों के अलावा अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

लावारिश मिला रेलवे कर्मी का शव

प्रयागराज। शाहगंज थाना क्षेत्र में रेलवे जंक्शन के समीप बुधवार दोपहर एक रेलवे कर्मचारी का शव लावारिश हालत में पाया गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई की। फतेहपुर जनपद के असोथर थाना क्षेत्र के बेरूई गांव निवासी धुन्नू प्रसाद 50वर्ष पुत्र इन्दू प्रसाद रेलवे में नौकरी करता था। उसके दो पुत्र और तीन बेटिया है। बताया जा रहा है कि बुधवार को घर से वह किसी काम से अपनी बड़ी बेटी सुमन के पास विभागीय काम से आया। लेकिन रास्ते में ही उसकी रेलवे जंक्शन के समीप अचानक संदेह जनक परिस्थितियों में अचेत होकर गिर गया। स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने पहले उसकी जान बचाने के प्रयास में उसे स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय में भर्ती कराया जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने उसके पास से मिले मोबाइल नम्बर से परिजनों को खबर दी तो देर शाम उसकी बेटी व परिवार के अन्य सदस्य पहुंचे। पुलिस ने शव का पंचनामा करके विधिक कार्रवाई की।

महापौर ने सुधार कार्य का किया लोकार्पण

प्रयागराज। महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी ने 14वें वित्त आयोग अंतर्गत वार्ड संख्या 73 के कल्याणी देवी पार्क के बगल पोस्ट ऑफिस से सामने एवं मोहन जी टंडन के आवास के पीछे गली नाली का सुधार कार्य का लोकार्पण किया गया । तत्पश्चात महेवा पूरब पट्टी में नए नलकूप अधिष्ठापन कार्य का निरीक्षण किया गया । उक्त अवसर पर क्षेत्रीय पार्षद श्रीमती मुमताज अंसारी, नीरज टंडन पार्षद प्रतिनिधि, अनूप मिश्रा पार्षद, हरीशचंद्र बाल्मीकि महाप्रबंधक जलकल, सतीश वर्मा ऐ.ई., मोहन जी टण्डन, अनिल पाठक, अनुज कपूर गुड्डू, अभय सिंह, सुनील टण्डन, तौशीफ अहमद, प्रेमनारायण, गुड्डू देवी, रेहान खान, राहुल आदि लोग उपस्थित रहे ।

सुधार कार्य का लोकार्पण करतीं महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी

ट्रेन के आगे कूदकर युवक ने की आत्महत्या

करछना। थाना क्षेत्र के बसरिया गांव के पास हावड़ा दिल्ली रेल मार्ग पर गुरुवार पांच बजे मेजा थाना क्षेत्र के एक युवक ट्रेन के सामने कूद कर आत्म हत्या कर ली । जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के पहाड पुर निभाया गांव का 22वर्षीय युवक तेज बहादुर पटेल पुत्र फूल चंद्र घर से किसी बात को लेकर नाराज होकर करछना थाना क्षेत्र के बसरिया गांव के पास हावड़ा दिल्ली रेल मार्ग पर सामने से आ रही ट्रेन के सामने कूद कर आत्म हत्या कर ली, सूचना पाकर मौके पर पहुंची करछना पुलिस ने युवक के जेब आधार कार्ड से उसके परिजनों को सूचना दी गई ।और लाश का पंचायत नामा कर पोस्ट मार्टम के लिए भेज दिया ।

सड़कों व पार्कों से हटाया गया अतिक्रमण

सड़कों व पार्कों से अतिक्रमण हटाता जेसीबी

प्रयागराज। विशेष कार्य अधिकारी आलोक कुमार पांडे के नेतृत्व में गुरुवार को विकास प्राधिकरण की ओर से सघन अभियान चलाया गया जिसमें कालिंदीपुरम आवास योजना में प्राधिकरण की भूमि सड़कों तथा पार्कों की जगहो पर अवैध कब्जों तथा अतिक्रमण को हटाया गया। यह अभियान यमुना कुंज सेक्टर, बरसाना सेक्टर, कालिंदीपुरम आवासीय योजना के राधाकुंड सेक्टर, कसारी मसारी आवास योजना में सब्जी मार्केट के पास मुख्य मार्ग पर स्थित अतिक्रमण हो अवैध कब्जों को हटाया गया। इस मौके पर विकास प्राधिकरण की दस्ता तथा पुलिस प्रशासन मौजूद रहे।

दो दिन में गंगा में छोड़ा गया 6.26 लाख क्यूसेक पानी

जलस्तर बढ़ने से गंगा किनारे बसे लोगों के घरों तक पहुंचा पानी

प्रयागराज। गंगा यमुना का जलस्तर अब तेजी से बढ़ रहा है। बीते दो दिनों में हरिद्वार, नरौरा और कानपुर से 6.26 लाख क्यूसेक पानी गंगा में छोड़ा जा चुका है। बुधवार को कानपुर से छोड़ा गया पानी गुरुवार सुबह प्रयागराज पहुंचा तो जलस्तर में बढ़ोतरी हुई। इससे बंधवा स्थित बड़े हनुमान मंदिर के बाहर सड़क पर पानी आ गया। पातालपुरी अक्षयवट गेट मार्ग भी डूब गया है, जिस कारण आवागमन बंद कर दिया गया है।

कानपुर बैराज से बुधवार सुबह 2.58 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया था। वहीं बेतवा नदी से यमुना में भी तेजी से पानी आ रहा था। गुरुवार सुबह अचानक दोनों नदियों का जलस्तर तेजी से बढ़ा। शाम चार बजे नैनी 81.14, छतनाग 80.50, फाफामऊ में 81.34 मीटर जलस्तर दर्ज किया गया है। सिचाई विभाग बाढ़ प्रखंड के कंट्रोल रूम के मुताबिक 24 घंटे में नैनी में 34, छतनाग में 38 और फाफामऊ में 32 सेंटीमीटर की बढ़ोतरी हुई है। बलुआघाट बारादरी के दो और गुंबद भी डूबने के कगार पर पहुंच गए हैं। यहां के दो गुंबद पहले ही डूब चुके हैं। ककरहा घाट भी पूरी तरह से जलमग्न हो गया है। अरैल घाट पर पानी तेजी से चढ़ने की वजह से यहां गोताखोरों को तैनात किया गया है और तेज बहाव को देखते हुए लोगों को यहां स्नान करने से रोका जा रहा है।

गंगा-यमुना में तेजी से बढ़ रह जलस्तर के कारण तटीय इलाके सलोरी, बघाड़ा, रसूलाघाट, बेली व राजापुर कछार में रहने वाले लोग अपने घर का सामान समेटकर निकलने की तैयारी में लग गए हैं। झूंसी की तरफ बदरा सोनौटी और मुंशी का पूरा भी पानी से घिर गए हैं। फाफामऊ बाईपास के पास कछार की तरफ रहने वाले भी भयभीत हैं। वर्जन गंगा-यमुना अभी खतरे के निशान से नीचे बह रही हैं। हरिद्वार, नरोरा और कानपुर बैराज से प्रतिदिन पानी छोड़ा जा रहा है, जिस कारण नदियों का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। बृजेश कुमार, अधिशासी अभियंता, सिचाई विभाग बाढ़ प्रखंड। औरया में यमुना का जलस्तर बढ़ रहा है। कालपी में भी यही हाल है। जिस कारण बेतवा उफान पर है और इसका पानी सीधे यमुना में जाता है, जिस कारण यमुना का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है।

हाईकोर्ट में न्यायपीठ सचिव संवर्ग के सात अधिकारी प्रोन्नत

प्रयागराज। महानिबंधक अजय कुमार श्रीवास्तव प्रथम की अधिसूचना के अनुसार गुरूवार को हाईकोर्ट में न्यायपीठ सचिव संवर्ग के सात अधिकारी प्रोन्नत किये गये। महानिबंधक के अनुसार रमा शंकर पाण्डेय (लखनऊ) को संयुक्त निबंधक सह न्यायपीठ सचिव श्रेणी चार के पद से निबंधक सह प्रमुख न्यायपीठ सचिव (सीनियर) के पद पर, लालजी प्रसाद (लखनऊ) उप निबंधक सह न्यायपीठ सचिव श्रेणी तीन के पद से संयुक्त निबंधक सह न्यायपीठ सचिव श्रेणी 4 के पद पर, अनिल कुमार कुशवाहा, मोहम्मद उबैदुर रहमान, महेन्द्र नाथ (लखनऊ) को सहायक निबंधक सह न्यायपीठ सचिव श्रेणी दो के पद से उप निबंधक सह न्यायपीठ सचिव श्रेणी 3 के पद पर, राजकुमार सिंह, अवधेश कुमार को न्यायपीठ सचिव श्रेणी एक के पद से सहायक निबंधक सह न्यायपीठ सचिव श्रेणी दो के पद पर पदोन्नति प्रदान की गयी है। उच्च न्यायालय कर्म अधिकारी संघ के महासचिव बृजेश कुमार शुक्ल ने समस्त पदोन्नति प्राप्त अधिकारियों को बधाई देते हुए मुख्य न्यायाधीश गोविंद माथुर, संघ के अध्यक्ष न्यायमूर्ति सुनीत कुमार, न्यायमूर्ति सिद्धार्थ और महानिबंधक अजय कुमार श्रीवास्तव प्रथम के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की है। बधाई देने वालों में संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कमलेश कुमार सिंह, कनिष्ठ उपाध्यक्ष निखिल कुमार सिंह, संयुक्त सचिव विजयानंद द्विवेदी, सहायक सचिव अभिषेक कुमार श्रीवास्तव, कोषाध्यक्ष अनुपम शुक्ल प्रमुख थे।

यूपी में शीघ्र गठित हो ट्रांस जेण्डर वेलफेयर बोर्ड : महामंडलेश्वर

बैठक के दौरान उपस्थित किन्नर अखाड़ा

प्रयागराज। किन्नर अखाड़ा प्रयागराज की महामण्डलेश्वर स्वामी कौशल्यानंद गिरि की अध्यक्षता में गुरूवार को एक बैठक उनके इन्द्रपुरी बैरहाना स्थित आवास पर हुई। जिसमें उन्होंने सरकार से मांग की है कि प्रदेश में ट्रांसजेण्डर वेलफेयर बोर्ड का गठन शीघ्र होना चाहिये और किन्नरों को सभी मूलभूत सुविधाएं मिलनी चाहिये। क्योंकि देश के कई प्रदेशों में बोर्ड का गठन हो चुका है। बैठक में महामण्डलेश्वर स्वामी कौशल्या नंद गिरि ने कहा कि आज भी समाज में किन्नर सबसे उपेक्षित और मूलभूत सुविधाओं से बहुत दूर हैं। जिससे उनका जीवन यापन करना मुश्किल होता जा रहा है। कहा कि किन्नर अखाडे. के आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी द्वारा सुप्रीम कोर्ट से लंबी लड़ाई के बाद किन्नरों को थर्ड जेण्डर का अधिकार मिला है। लेकिन आज तक कोई भी मूलभूत सुविधा नहीं मिल रही है। जिससे हम लोग परेशान हैं। उन्होंने कहा कि उड़ीसा, बिहार, झारखण्ड, महाराष्ट्र, दिल्ली सहित अन्य प्रदेशों में ट्रांस जेण्डर वेलफेयर बोर्ड का गठन किया गया है। वहां पर सभी योजनाओ का लाभ मिल रहा है। आवास सहित अन्य योजनाओं का लाभ बिहार, झारखण्ड सहित अन्य प्रदेशो में मिल रहा है।

उन्होंने बताया कि सुविधाओ में आवास, बिजली-पानी का कनेक्शन, राशन कार्ड, उज्जवला योजना के तहत गैस सिलेण्डर, पेंशन सहित अन्य योजनाओं का लाभ मिलता है। कहा कि आज समाज और दुनिया बहुत बदल गयी है। लेकिन लोगों की किन्नरों के प्रति सोच बहुत धीरे-धीरे बदल रही है। कहा कि हम भी इसी समाज और मां-बाप के बच्चे हैं। सरकार को सभी टैक्स भी देते हैं, लेकिन समाज और सरकार की अब हम लोगों के प्रति सोच बदलनी चाहिये और आगे बढ़कर मदद करनी चाहिये।

बारिश में भी तिरपाल ओढ़कर जारी रहा छात्रों का अनशन

प्रयागराज। इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय (इविवि) के छात्रसंघ भवन पर बारिश के बावजूद छात्रों का क्रमिक अनशन होता रहा। छात्रनेता अजय यादव सम्राट के नेतृत्व में चल रहे अनशन को पूर्व अध्यक्ष इंदु प्रकाश सिंह और पूर्व उपाध्यक्ष आरपीएन सिंह का समर्थन मिला।

इंदु प्रकाश ने कहा कि यह आश्चर्य की बात है की विश्वविद्यालय ऑनलाइन परीक्षाओं की बात कर रहा है, लेकिन लाइब्रेरी डिजिटल करने में असंवेदनशील है। आरपीएन सिंह ने कहा कि अगर ऑनलाइन परीक्षा कराना है तो छात्रावासों को खोल दिया जाए। साथ ही छात्रावासों में वाई-फाई की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाए। पूर्व उपाध्यक्ष चंद्रशेखर चौधरी ने कहा जो छात्र डेलीगेसी में रहते हैं, उनके लिए ऑनलाइन परीक्षा के लिए विश्वविद्यालय परिसर में ही अलग से व्यवस्था कराई जानी चाहिए। इस दौरान अविनाश विद्यार्थी, राहुल पटेल, नवनीत यादव, मो. मुबाशिर, संदीप पटेल, मो. मकसूद अंसारी, आनंद सांसद, अनीश यादव, मो. सलमान, शिवबली, श्रवण यादव, आदेश आदि लोग मौजूद रहे।

बारिश में तिरपाल ओढ़कर अनशन कर रहे छात्र

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ (ठकुराई गुट) ने बैठक कर शिक्षक दिवस को संकल्प दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। संगठन के प्रदेश अध्यक्ष जगदीश पांडेय ने सरकार से मांग की कि विद्यार्थियों को शिक्षा के समान अवसर व शिक्षा का व्यय, वित्त विहीन विद्यालयों के शिक्षकों के लिए वेन और सुरक्षा, पुरानी पेंशन योजना व कटौती भत्तों को बहाल व राज्य कर्मियों की तरह शिक्षकों को भी कैशलेस चिकित्सा प्रतिपूर्ति की सुविधा दी जाए। ऐसा न होने पर विरोध जताएंगे। प्रदेश महामंत्री लालमणि द्विवेदी ने कहा कि वर्तमान में कुछ पहुंच वाले शिक्षकों की ही सुनवाई हो रही है।

अखण्ड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम कियायोग आश्रम एवं अनुसंधान सस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं0: UPHIN2001/9025

सोशल मीडिया के माध्यम से हुई वृद्ध के शव की पहचान

प्रयागराज। सिविल लाइंस लाइंस साइड रेलवे स्टेशन के बाहर मंगलवार को लावारिश हालत में मिले वृद्ध के शव की सोशल मीडिया के माध्यम से बुधवार दोपहर पहचान कर ली गई। शव का पोस्टमार्टम होने के बाद परिवार के लोग शव अन्तिम संस्कार के लिए ले गए। शहर के मुट्ठीगंज थाना क्षेत्र के बहादुरगंज मोहल्ला निवासी रमजान (70) पुत्र मोहम्मद युसुफ की दिमागी हालत ठीक नहीं थी। उसके दो पुत्र और एक पुत्री एवं पत्नी रूखशाना घर पर ही रहते है। बताया जा रहा है कि वह घर से अधिकतर बाहर वगैर बताए निकल जाता था। इसी तरह घूमते हुए वह रेलवे जंक्शन पर पहुंच गया जहां उसकी मंगलवार को मौत हो गई। सूचना पर पहुंची सिविल लाइंस पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई की। इसी बीच अज्ञात गुमसुदा तलाश के ग्रुप एडमिन समाज सेवी मो. आरिफ को पता चला तो उन्होंने उसकी फोटो सोशल मीडिया में वायरल किया। फोटो वायरल होने के बाद, परिवार वालों को पता चला तो, बुधवार दोपहर उसे खोजते हुए परिवार के लोग पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे।

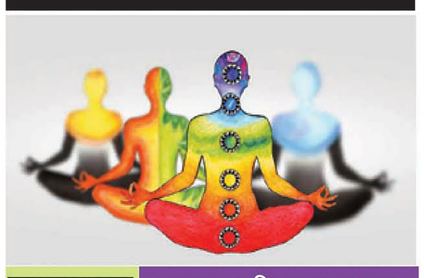

प्रयागराज शुक्रवार, 4 सितम्बर, 2020

क्रियायोग सन्देश

स्वरूप की रचना पंचकोश के रूप में

जब हम क्रियायोग का अभ्यास पूरी भक्ति के साथ लगातार करते हैं तो इस सच की अनुभूति होती है कि हम ईश्वर के अमर संतान हैं।

हम यह भी अनुभव करते हैं की दृश्य जगत जो कुछ बना है वह निराकार प्रभु का साकार रुप है। हमारा अस्तित्व पांच कोषों से मिलकर बना हुआ है।

प्रथम कोष को हृदय कोष कहते हैं, इसे चित्त भी कहते हैं। इसे आनंदमय कोष भी कहते हैं। शास्त्रों में चित्त को सृष्टि - मुख कहा गया है।

दूसरा, तीसरा, चौथा और पांचवे कोष को बुद्धि या ज्ञानमय कोष, मनोमय कोष, प्राणमय कोष और पांचवां जड़ पदार्थ वाले क्षेत्र को आन्नमय कोष कहते हैं। ये पांच कोष अदृश्य हैं जिसे केवल इन्ट्यूशन (प्रज्ञा चक्षु) द्वारा हम देख सकते हैं। परम ब्रह्म, निराकार, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और अमर हैं। वही सब कुछ हैं। वही रचनाकार हैं, वही रचना भी हैं और रचना-प्रविधि भी है। परमात्मा का स्वभाव सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह ब्रह्मचर्य है,...

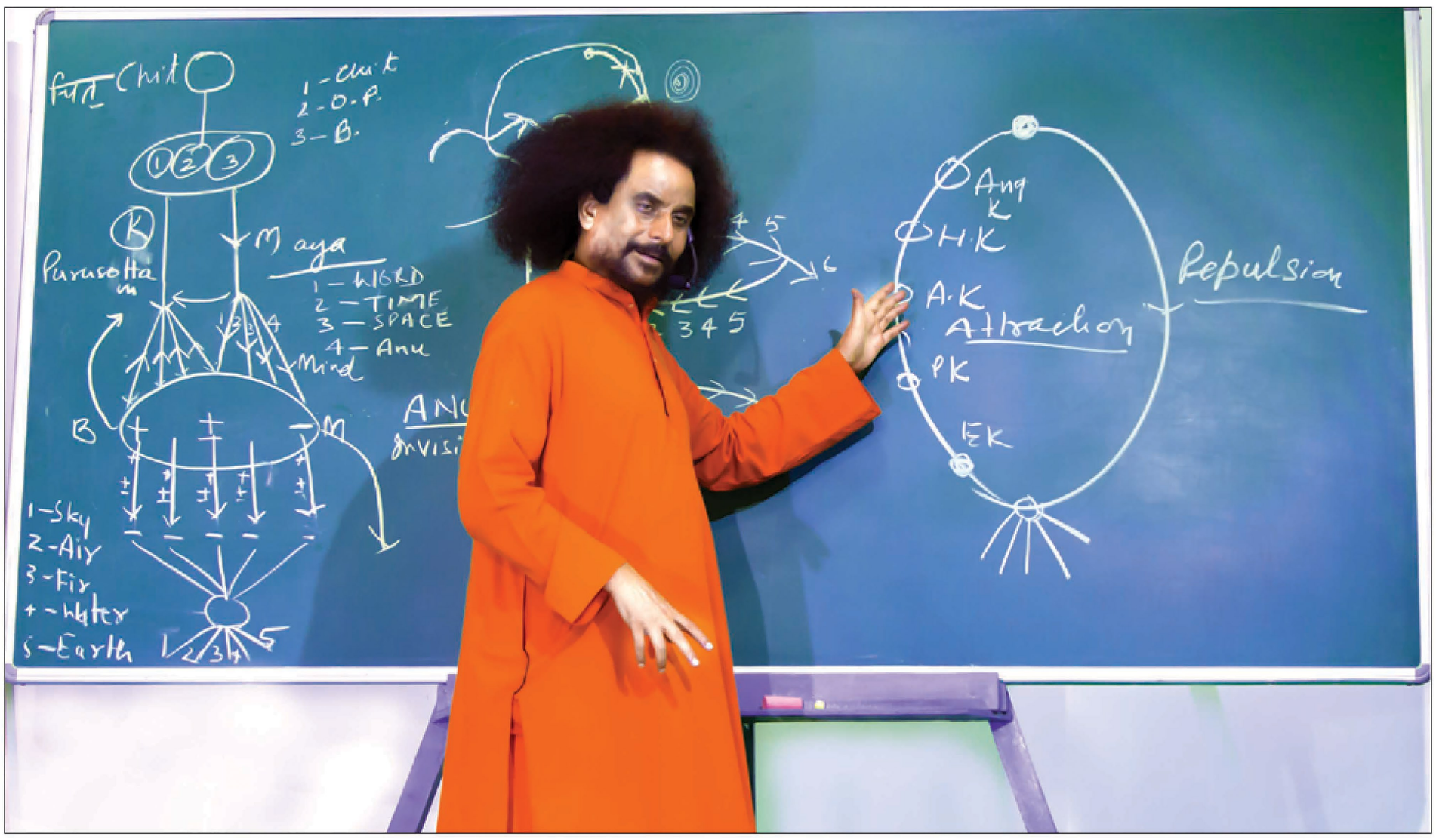

जो पंचकोश ऊपर लिखित है भगवान की प्रतिकर्षण शक्ति के द्वारा प्रकट हुए है। शक्ति दो प्रकार की है एक आकर्षण और दूसरी प्रतिकर्षण शक्ति (अट्रैक्शन एंड रिपल्शन)। प्रतिकर्षण शक्ति के द्वारा पंचकोश की रचना हुई है। आकर्षण शक्ति के द्वारा अनेक प्रकार की रचनाएं प्रकट हुई हैं -इन्मेट किंगडम जिससे निर्जीव साम्राज्य कहते हैं, (परमाणु का साम्राज्य), वनस्पति जगत, जीव जंतु जगत, ह्यूमन जगत और देवताओं जगत।

शब्दों द्वारा व्यक्त उक्त विचार को हम समझ नहीं सकते, शब्दों में छिपे सत्य को समझने के क्रियायोग अभ्यास ही प्रमाणित प्रविधि है। क्रियायोग अभ्यास में हम अपनी एकाग्रता को "चित्त" में केंद्रित करते है। चित्त मस्तिष्क के मैंडूला में उपस्थित है। चित्त सबसे प्रारंभिक? रचना है।

FIVE KOSHAS - THE STRUCTURE OF SELF

By unceasing practice of Kriyayoga, the moment we experience the Truth that we are not mortals but Immortal children of God, we also realise that the structure of our visible existence is made up of five coverings which are known as five Koshas.

The first of the five coverings is known as " Heart (Chitta) " or seat of Bliss. It is the innermost covering and is known as Anandmaya Kosha. It is also known as the seat of creation (srishti- mukh सृष्टि मुख).

The second , third , fourth and fifth Koshas are Buddhi (Gyanamaya Kosha), Manas (Manomaya Kosha), Prana (Praanamaya Kosha) and Gross matter (Annamaya Kosha).

All five Koshas are invisible to human eyes and only through intuitive vision can one see them. God (Parambrahma) is formless, Omnipresent, Omniscient, Omnipotent and Immortal consciousness. God is all in all. God is the creator, the creation and the act of creation (Brahma Consciousness). The nature of God is Truth (satya), Non-violence (ahimsa), Non-stealing (asteya), ...

Attraction - Repulsion is the power of God. All the above-mentioned Koshas are manifestation of God. With the power of Repulsion, God manifested as the form of Koshas. After the completion of the creation of Koshas, with the power of Attraction, God manifested as the Inanimate Kingdom (Gross matter), Plant Kingdom, Animal Kingdom, Human Kingdom and Angelic Kingdom.

By reading the above matter, we cannot correctly understand. It has been proven that practice of Kriyayoga brings understanding quickly. For true understanding, we have to practise Kriyayoga. In Kriyayoga practice, one learns to practise concentration on “Chitta” (Heart) center, which is densely located within the medulla part of the brain. “Chitta” is the prime structure, the first creation.